

कलेवा पुं. (तद्.) 1. प्रातःकाल का जलपान 2. मार्ग में खाने के लिए साथ लिया गया भोजन 3. कुँवर कलेवा (कुँवर कलेऊ) की वैवाहिक रीति।

कलेस पुं. (तद्.) 1. कला का ईश अर्थात् वह कलाकार जो सारी तथा बड़ी से बड़ी कलाओं का जाता और स्वामी है, ईश्वर, परमात्मा 2. क्लेश, दुख या कष्ट 3. योगसाधना में बाधक पाँच क्लेश (अविद्या आदि)।

कलेसकारी वि. (तद्.) 1. कष्ट या क्लेश देने या पहुँचाने वाला 2. क्लेश या झगड़ा करने वाला।

कलेसहर वि. (तद्.) दुखों को हरने या मिटाने वाला, दुख दूर करने वाला।

कलेसहारी वि. (तद्.) कलेसहर, दुःख दूर करने वाला।

कलै क्रि.वि. (देश.) 1. अपनी इच्छा से 2. स्वेच्छापूर्वक 3. सुख चैनपूर्वक 4. अवसर पर उदा. बरषै हरषि आपनै कलै नन्ददास ग्रंथ (रसमंजरी, 5)।

कलैया स्त्री. (देश.) 1. कलाई, मणिबंध 2. कलाबाजी, सिर के बल उलटकर कला खाना, कला जैसे-कलैया खाकर दिखाओ 3. किसी वृक्ष या पौधे की शाख का प्रारंभिक रूप, भाग, नई फूटी हुई शाखा उदा. 1. अरे! यह पौधा तो अब कलैया छोड़ने लगा 2. इस ठूँठ में तो कलैया फूट उठी।

कलोर स्त्री. (देश.) 1. जवान बछिया, वह गाय जो अभी गाभिन न हुई हो, तरुण बछड़ा उदा. "बगरे सुरधेनु के धौल कलोरे -तुलसी 7/144) 2. (तत्.-कल्लोल) स्त्री. (तद्.) 1. मौज-मस्ती 2. तरंग, लहर 3. क्रीड़ा उदा. सूखे सरवर उठै हिलोर बिनु जल चकवा करत कलोर -कबीर (पद 152)।

कलोल स्त्री. (तद्.) कल्लोल 1. तरंग, लहर, क्रीड़ा, मौज-मस्ती 2. वि. 'मनोहर', सुंदर, मनमोहक।

कलोलकारी वि. (तद्.) क्रीड़ाशील।

कलोलना/कल्लोलना अ.क्रि. (तद्.) 1. हिलना-डुलना 2. मौज मस्ती करना 3. क्रीड़ा करना 4.

तरंगित होना उदा. कलोलकारी खग का कलोलना -हरिऔध (प्रियप्रवास)।

कलौंजी स्त्री. (देश.) 1. मंगरैल नामक पौधा जिसके बीज मसाले में काम आते हैं 2. मसाले से भरी हुई तली गई भिंडी, बैंगन आदि तरकारी 3. छोंक में प्रयुक्त होने वाले प्याज के बीज 4. कच्चे आम की वह तरकारी जो गुड़ या शक्कर डालकर तैयार की जाती है जिसे प्रायः "लौंजी" कहा जाता है।

कलौंस स्त्री. (देश.) 1. कालिख 2. हल्की कालिमा 3. कलौंछ 4. स्याही 5. कलंक।

कलौंछ स्त्री. (देश.) हल्की-हल्की कालिमा, कालेपन की झलक, कालिख।

कल्क पुं. (तत्.) तेल आदि के नीचे जम जाने वाली तलछट या मैल, किट्ट, काँड़ट 2. कान का मैल 3. कपट 4. दंभ 5. पाप आयु. किसी वस्तु का कुछ जल मिलाकर पीसा हुआ चूर्ण।

कल्क कषाय पुं. (तत्.) ताजी हरी वनस्पति को पानी के साथ धोकर पीसने से प्राप्त चूर्ण जो खाने के लिए रोगी को दिया जाता है।

कल्क प्रक्षेप पुं. (तत्.) ताजी वनस्पति को जल से धोकर पीसा गया चूर्ण जिसे घी, तेल, आसव आदि मिलाकर खाने के लिए रोगी को दिया जाता है।

कल्प वि. (तत्.) 1. बहुत थोड़ा कम या लगभग बराबर जैसे- 'देवकल्प' 2. उचित, योग्य, ठीक 3. साध्य, होने लायक, संभव (समासयुक्त) पद के अंत में प्रयुक्त जैसे- देवकल्प, ऋषिकल्प आदि; समान, सदृश्य, लगभग व समान, समर्थ पुं. (तत्.) 1. छह वेदांगों (शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त आदि) में से एक जिसमें यज्ञों एवं संस्कारों इत्यादि की विधियाँ वर्णित होती हैं 2. 4,3200,00,000 सौर वर्षों के बराबर एक हजार चतुर्युग वाला ब्रह्मा का (भारतीय काल-गणनानुसार) एक दिन 3. धर्मशास्त्र सम्मल धार्मिक कर्तव्यों का विधि-विधान नाम. एक विशाल कालखंड उदा. "निमिष से मेरे विरह के